॥ वट पूर्णिमा व्रत कीमहत्व ॥

॥ वट पूर्णिमा शुभ हो ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ ज्येष्ठ पूर्णिमा और वट वृक्ष ॥

वट पूर्णिमा ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा से जुड़ा व्रत है। महाराष्ट्र, गोवा और पश्चिम भारत के अनेक परिवारों में इस अवसर पर वट वृक्ष के पास सावित्री-सत्यवान का स्मरण किया जाता है। विवाहित महिलाएँ पति और परिवार के स्वास्थ्य तथा सुख की प्रार्थना करती हैं।

वट वृक्ष का प्रतीक

बरगद की विस्तृत छाया, मजबूत जड़ें और लंबे समय तक जीवित रहने की क्षमता उसे स्थिरता और आश्रय का प्रतीक बनाती हैं। वृक्ष को जल अर्पित करना, उसके पास कथा सुनना और परिक्रमा करना प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का अवसर भी है।

सावित्री की कथा से संबंध

महाभारत की सावित्री-सत्यवान कथा में सावित्री का धैर्य, विवेक और यमराज से धर्मयुक्त संवाद प्रमुख है। उन्होंने अपने पति के साथ-साथ अपने ससुर और पिता के कल्याण के लिए भी वर माँगे। वट पूर्णिमा पर यह कथा सुनकर संबंधों में सम्मान और परस्पर सहयोग का स्मरण किया जाता है।

पूर्णिमा और अमावस्या का अंतर

कई उत्तर भारतीय परिवार ज्येष्ठ अमावस्या पर वट सावित्री मनाते हैं, जबकि अनेक पश्चिम भारतीय परिवार ज्येष्ठ पूर्णिमा पर वट पूर्णिमा रखते हैं। कथा और वट पूजन में समानता है, पर व्रत की तिथि और कुछ विधियाँ अलग हो सकती हैं।

॥ व्रत का पारिवारिक और सांस्कृतिक भाव ॥

प्रार्थना और साझा देखभाल

इस व्रत की प्रार्थना प्रियजनों के मंगल से जुड़ी है। परिवार में एक-दूसरे की देखभाल, बीमारी में सहयोग, पर्याप्त विश्राम और सम्मानपूर्ण व्यवहार इस भावना को दैनिक जीवन में उतारते हैं। पूजा का अर्थ किसी एक सदस्य पर कठोर नियमों का दबाव डालना नहीं है।

पीढ़ियों से चलती परंपरा

कथा सुनाना, पूजा की सामग्री तैयार करना और प्रसाद बाँटना पीढ़ियों को जोड़ता है। कुछ घरों में श्रृंगार, गीत या भेंट की विशेष रीति रहती है। इन्हें अपने परिवार की परंपरा और सामर्थ्य के अनुसार अपनाया जा सकता है।

वृक्ष की रक्षा

वट वृक्ष के सम्मान में उसकी जड़ों को क्षति न पहुँचाएँ, तने पर बहुत कसकर धागा न बाँधें और प्लास्टिक न छोड़ें। यदि पास में वृक्ष न हो तो चित्र या प्रतीक के सामने घर पर कथा-पाठ और प्रार्थना कर सकते हैं, जैसा परिवार में स्वीकार हो।

व्रत और कथा धार्मिक आस्था के विषय हैं। इनसे आयु या स्वास्थ्य का निश्चित परिणाम मिलने का दावा न करें; परिवार की वास्तविक स्वास्थ्य-आवश्यकताओं पर भी ध्यान दें।

॥ देवी सावित्री सबका मंगल करें ॥